International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

प्राचीन साहित्यिक स्रोतों में नालंदा की प्रासंगिकता

शोध छात्र
रोहित कुमार गुप्ता
प्राचीन इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

साहित्यिक स्रोतों से नालन्दा के इतिहास की प्राचीनता छठीं शताब्दी ई0 पूर्व तक जाती है। यह शताब्दी महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी एवं मक्खलिपुत्त गोसाल के जीवन से सम्बन्धित है तथा इन तीनों ही महात्माओं का सम्बन्ध नालन्दा से रहा है जिसके कारण नालन्दा की पहचान एक ऐतिहासिक स्थल के रूप में हुई। अतः प्रतीत होता है कि इसके ऐतिहासिक महत्व के कारण ही गुप्त सम्राट कुमार गुप्त प्रथम (शक्रादित्य) ने 5 वीं शताब्दी ई0 में यहां पर बौद्ध महाविहार की आधारशिला रखी।

नालन्दा के इतिहास में छठीं शताब्दी ई. पूर्व के बाद तथा 5वीं शताब्दी ई. के पहले का विवरण दुर्भाग्य से अनुपलब्ध है जिसके कारण इसके इतिहास में निरन्तरता का अभाव है। 7वीं शताब्दी ई0 तथा उसके बाद आये चीनी एवं तिब्बती यात्रियों के यात्रा–विवरणों से नालन्दा की उन्नति के चरमोत्कर्ष तथा उसके पतन की विस्तृत जानकारी मिलती है जिसकी पुष्टि पुरातात्विक स्रोतों से भी होती है, परन्तु इसके प्रारम्भिक इतिहास की जानकारी हेतु हमें प्राचीन बौद्ध एवं जैन ग्रन्थों पर ही निर्भर रहना पड़ता है।

नालन्दा का सर्वप्रथम उल्लेख बौद्ध तथा जैन ग्रन्थों में मिलता है। महात्मा बुद्ध अपने नालन्दा प्रवास के दौरान प्रायः नालन्दा के प्रावारिक आम्रवन में ठहरते थे। इसी आम्रवन में धर्मसेनापति सारिपुत्र महात्मा बुद्ध से मिले थे। उनसे मिलने के बाद सारिपुत्र ने यह विचार व्यक्त किया था कि परमज्ञान की प्राप्ति में बुद्ध से बढ़कर कोई दूसरा श्रमण, ब्राह्मण न पहले हुआ है, न इस समय है और न आगे होगा।[1] यहीं पर

महात्मा बुद्ध ने प्रज्ञा, शील तथा समाधि के विषय में परिचर्चा की थी।[2] दीघ निकाय के 'केवट्ट सुत्त' से पता चलता है कि केवट्ट नामक गृहपति पुत्र महात्मा बुद्ध से कहता है, भन्ते! यह नालन्दा समृद्ध, धनधान्यपूर्ण और बहुत जनाकीर्ण (घनी बस्ती वाली) है। यहां के मनुष्य आपके प्रति बहुत श्रद्धालु हैं, यदि आप यहां ऋद्धिबल (चमत्कार) दिखाएं तो यहां के निवासी आपका सम्मान करेंगे तथा आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी, परन्तु महात्मा बुद्ध ने केवट्ट को इसके लिए मना करने के साथ ही ऋद्धि प्रतिहार्य, आदेशना प्रतिहार्य तथा अनुशासनी प्रतिहार्य के विषय में बतलाया था, जिसमें गान्धारी विद्या और चिन्तामणि विद्या का भी उल्लेख हुआ है।[3] यहीं पर महात्मा बुद्ध ने केवट्ट को देवताओं के तीन चमत्कारों के बारे में भी बताया था।[4] प्रावरिक आम्रवन में ही महात्मा बुद्ध ने सम्यक आचार, सम्यक संकल्प तथा सम्यक वाक् के विषय में भिक्षुओं से वृहद चर्चा की थी।[5]

संयुक्त निकाय के 'कुल सुत्त' से पता चलता है कि एक बार महात्मा बुद्ध कोसल से चारिका करते हुए नालन्दा पहुंचे[6]। उस समय नालन्दा में सूखा पड़ा हुआ था। असिबन्धक पुत्र ग्रामणी की जिज्ञासा को शान्त करते हुए महात्मा बुद्ध ने बताया कि व्यक्ति को भूमि की उर्वरता के अनुसार ही बीजारोपड़ करना चाहिए।[7]

मज्झिम निकाय के 'उपालि सुत्त' से पता चलता है कि एक समय महात्मा बुद्ध नालन्दा के प्रावारिक आम्रवन में विहार कर रहे थे, नालन्दा के प्रावारिक आम्रवन में ही उपालि नामक गृहस्थ ने जो कि महावीर स्वामी का भक्त था महात्मा बुद्ध से शास्त्रार्थ किया तथा पराजित होने पर बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया। कहा जाता है कि इस समाचार को सुनकर महावीर ने मुँह से खून उगल दिया था।[8] संयुक्त निकाय के पच्छाभूमक सुत्त, देसना सुत्त, संख सुत्त तथा दो नालन्दा सुत्तों का उपदेश महात्मा बुद्ध ने नालन्दा के प्रावारिक आम्रवन में ही दिया था।[9]

जातक ग्रन्थों में भी नालन्दा का उल्लेख यदा–कदा हुआ है, जिसमें इसका नाम 'नाल' या 'नालक' उल्लिखित है। महासुदस्सन जातक से पता चलता है कि

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

नाल ग्राम में महात्मा बुद्ध के प्रधान शिष्य धर्मसेनापति सारिपुत्र का जन्म तथा महापरिनिर्वाण हुआ था।[10] नाल ग्राम नालन्दा का ही पर्याय है।[11] इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि छठीं शताब्दी ई. पूर्व में नालन्दा एक समृद्ध गांव था। यह राजगृह से एक योजन की दूरी पर स्थित था[12]। राजगृह से पाटलिपुत्र जाते समय नालन्दा विश्राम स्थली के रूप में प्रयोग में लाया जाता था[13] बुद्ध ने कई बार इस पथ का उपयोग किया था[14]। संयुक्त निकाय में इसका उल्लेख है।

जैन ग्रन्थों में नालन्दा को राजगृह का उपनगर (वाहिरिका) कहा गया है।[15] कल्पसूत्र से ज्ञात होता है कि महावीर स्वामी ने नालन्दा तथा उसके समीप चौदह चातुर्मास व्यतीत किए थे।[16] महावीर स्वामी अपना दूसरा चातुर्मास नालन्दा में एक जुलाहे की तुंतुशाला में व्यतीत किया था। उसी समय मक्खलिपुत्त गोसाल भिक्षाटन करते हुए वहां पहुंचे तथा उनकी मुलाकात महावीर स्वामी से हुई। परन्तु बाद में मतभेद हो जाने के कारण मक्खलिपुत्त गोसाल महावीर से अलग हो गये तथा कालान्तर में आजीवक सम्प्रदाय के संस्थापक बने।[17]

महावीर स्वामी ने अपना चौतीसवां वर्षावास नालन्दा में ही व्यतीत किया था[18] वर्षावास के दौरान महावीर एवं इन्द्रभूति गौतम के बीच दार्शनिक बातों पर विचार–विमर्श हुआ था। महावीर स्वामी ने अपना 48वाँ वर्षावास भी नालन्दा में ही व्यतीत किया था। इस वर्षावास के दौरान महावीर स्वामी ने इन्द्रभूति गौतम की शंकाओं के समाधान के क्रम में क्रियाकाल और निष्ठाकाल, परमाणुओं के संयोग–वियोग, भाषा के भाषत्व, क्रिया की दुखात्मा, दुख की अकृत्रिमता आदि के बारे में विस्तृत चर्चाएं की थी।[19] इस प्रकार स्पष्ट होता है कि भगवान महावीर के साथ–साथ उनके शिष्यों का समबन्ध भी नालन्दा से रहा है। महावीर स्वामी की कर्मभूमि होने के कारण छठीं शताब्दी ई. पूर्व में नालन्दा का ऐतिहासिक एवं धार्मिक महत्व बढ़ गया तथा यह स्थान जैनियों के लिए एक तीर्थस्थल के रूप में पूज्य हो गया।

चीनी स्रोतों में मुख्य रूप से फाह्यान, ह्वेनसांग तथा इत्सिंग का यात्रा वृत्तान्त आता है। 5वीं शताब्दी से 7वीं शताब्दी के मध्य भारत भ्रमण हेतु आये इन धर्म यात्रियों का यात्रा–विवरण भारत के इतिहास निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इन यात्रियों ने अपने यात्रा–वृतान्त में नालन्दा के सन्दर्भ में विस्तृत वर्णन किया है। जिसमें ह्वेनसांग का यात्रा–वृतान्त अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

चीनी यात्री फाह्यान 5वीं शताब्दी में भारत भ्रमण हेतु आया था उसने लिखा है कि राजगृह से दक्षिण–पश्चिम में एक योजन की दूरी पर नाल ग्राम स्थित है।[20] इस स्थान फाह्यान ने एक स्तूप भी देखा था जो उस समय तक अच्छी अवस्था में मौजूद था।[21] फाह्यान ने नालन्दा का एक विश्वविद्यालय या महाविहार के रूप में कोई उल्लेख नहीं किया है। इसका कारण यह हो सकता है कि फाह्यान 400–411 ई. के मध्य भारत की यात्रा किया था, क्योंकि उस समय तक महाविहार की नींव पड़ी ही नहीं होगी। इस सम्बन्ध में संकालिया का विचार है कि फाह्यान का विवरण अत्यन्त संक्षिप्त एवं अपूर्ण है, इसलिए नालन्दा के सम्बन्ध में उसके मौन से यह सिद्ध नहीं होता है कि नालन्दा उस समय ख्यातिविहीन था।[22] क्योंकि सारिपुत्र के निर्वाण स्थल पर एक स्तूप बना हुआ था।[23] और वह स्तूप उस समय तक वर्तमान था जब अशोक ने वहां की यात्रा की थी।[24] इससे स्पष्ट होता है कि फाह्यान द्वारा उल्लिखित स्तूप सम्राट अशोक के वहां आगमन के पूर्व ही निर्मित था तथा नालन्दा एक बौद्ध स्थल के रूप में प्रसिद्ध था।

प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग जिसका भारतीय नाम मोक्षदेव था, सातवीं शाताब्दी (630–645ई.) में भारत भ्रमण हेतु आया था। उस समय उत्तर भारत पर हर्षवर्द्धन (606–647ई.) का अधिपत्य था।[25] वह नालन्दा में पांच वर्षों (635–640ई.) तक रहकर विद्याध्ययन किया। उसने अपने यात्रा विवरण में नालन्दा का विस्तृत वर्णन किया है। ह्वेनसांग नालन्दा महाविहार का संस्थापक शक्रादित्य को बताता है[26]। जिसकी पहचान गुप्त शासक कुमारगुप्त प्रथम 'महेन्द्रादित्य' (415–455ई.) के रूप में

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

गयी है। ह्वेनसांग लिखता है कि शक्रादित्य ने महाविहार बनवाने हेतु इस स्थान का चुनाव एक ज्योतिषी के परामर्श से किया था, जिसने उसे सुझाव दिया था कि यहां निर्मित विहार विश्वविख्यात होगा तथा एक हजार वर्षों तक इसकी ख्याति रहेगी।[27] शक्रादित्य के बाद उसके वंश के चार अन्य शासकों यथा–बुधगुप्त, तथागतगुप्त, बालादित्य तथा बज्र ने उसके द्वारा निर्मित विहार के क्रमशः दक्षिण, पूर्व, उत्तर–पूर्व तथा पश्चिम में अलग–अलग विहारों का निर्माण करवाये।[28]

ह्वेनसांग आगे लिखता है कि सम्राट हर्षवर्द्धन नालन्दा की व्यवस्था को सुदृढ़ बनाए रखने हेतु सौ ग्रामों का कर दान देता था।[29] इसके अतिरिक्त नालन्दा ग्राम में रहने वाले सौ गृहस्थों के भरण–पोषण हेतु भी वह अन्न, घी, दूध आदि की व्यवस्था करता था।[30] नालन्दा में हर्षवर्द्धन ने एक ऐसे विहार का निर्माण भी कराया था, जिस पर पीतल की परत चढ़ी हुई थी, जिसका साक्षी ह्वेनसांग स्वयं था[31] हर्ष के बाद कई अन्य भारतीय शासकों ने भी नालन्दा महाविहार को आर्थिक सहायता प्रदान की थी, जिनमें से पूर्णवर्मा का उल्लेख ह्वेनसांग करता है, जिसने भगवान बुद्ध की एक 80 फीट ऊंची कांस्यमूर्ति विश्वविद्यालय को दान में दी थी।[32]

इसके अलावा ह्वेनसांग नालन्दा विश्वविद्यालय के पठन–पाठन, उसके आचार्यों, विद्यार्थियों, विश्वविद्यालय के नियम–कानून आदि का भी वर्णन करता है। ह्वेनसांग ने स्वयं यहा पर योगशास्त्र, न्याय, अनुशासन, व्याकरण, महायान कोश तथा विभाषा आदि की शिक्षा ग्रहण की थी।[33] ह्वेनसांग के वर्णन से यह ज्ञात होता है कि उस समय नालन्दा शिक्षा एवं विद्या का अद्वितीय केन्द्र था। ह्वेनसांग के समय नालन्दा में 8500 विद्यार्थी तथा 1510 शिक्षक थे जिनका अनुपात 1:5 था। इससे स्पष्ट होता है कि प्रत्येक विद्यार्थी का अपने शिक्षकों से व्यक्तिगत सम्पर्क रहा होगा, जो शैक्षणिक दक्षता का प्रमाण है।[34]

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि ह्वेनसांग के नालन्दा प्रवास के दौरान नालन्दा विश्वविद्यालय अपनी उन्नति के चरम पर था जिसका वर्णन उसने अपने यात्रा–वृत्तान्त में विस्तार से किया है।

इत्सिंग दूसरा प्रसिद्ध चीनी यात्री था जो ह्वेनसांग के वपास जाने के लगभग 30 वर्षों बाद सन् 673 ई. में भारत आया।[35] वह दस वर्षों (675–685ई.) तक नालन्दा विश्वविद्यालय में अध्ययन करता रहा।[36] इस दौरान उसने नालन्दा के 'रत्नोदधि पुस्तकालय से 400 ग्रन्थों की हस्तलिखित प्रतियां तैयार किया।[37] इत्सिंग के समय नालन्दा मे ं3000 से अधिक विद्यार्थी अध्ययनरत थे।[38]

इत्सिंग ने अपने यात्रा–वृत्तान्त में नालन्दा के भिक्षुओं के आदर्श जीवन की चर्चा करते हुए लिखा है कि यहां के भिक्षु अनुशासनप्रिय तथा विनयशील हैं, विश्व के समस्त बौद्धों को इनका अनुसरण करना चाहिए।[39] इत्सिंग एक घटीयन्त्र की भी चर्चा करता है। इत्सिंग यहां के पुस्तकालय का भी वर्णन करता है। वह लिखता है कि नालन्दा के धर्मगंज इलाके में रत्नसागर, रत्नोदधि तथा रत्नरंजक नामक तीन विशाल पुस्तकालय थे जिनमें असंख्य ग्रन्थ संग्रहीत थे।[40] इत्सिंग अपने यात्रा–विवरण बौद्ध धर्म के वृत्तान्त' के 34 वें अध्याय में विश्वविद्यालय के पाठ्य विषयों का भी विवरण देता है, जिसमें बौद्ध धर्म ग्रन्थों के अलावा न्याय, दर्शन तथा संस्कृत व्याकरण आदि का उल्लेख है।[41] संस्कृत व्याकरण अनिवार्य विषय था, जिसके अन्तर्गत पाणिनी सूत्र, धातु पाठ, अष्ट धातु, उणादि सूत्र तथा कशिकावृत्ति आदि ग्रन्थ आते थे।[42] इत्सिंग ने अपने पूर्व तथा समकालीन कुछ विदेशी छात्रों का परिचय भी दिया है। जिनमें ताओ–हि, हुई–पिह, हुएन–चाओ, वृकिंग, हुई–ताओ, ताओ–सिंग, तंग तथा ताओ–लिन प्रमुख हैं। ताओ–हि चीनी विद्यार्थी था जिका भारतीय नाम श्रीदेव था। उसने नालन्दा विश्वविद्यालय को कई चीनी ग्रन्थ समर्पित किया था।[43]

चीनी तथा तिब्बती विवरणों के बाद नालन्दा के पुरालेख ही बचते हैं जिनसे वहां का इतिहास जाना जा सकता है। 13वीं शताब्दी में नालन्दा के विनाश के बाद

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

लगभग छः शताब्दियों तक विस्मृति के गर्त में डूबे रहने के बाद 19वीं शताब्दी में नालन्दा के पुरावशेष प्रकाश में आए। अन्वेषण तथा पुरातात्विक उत्खनन के फलस्वरूप यहां से काफी संख्या में अभिलेखात्मक सामग्री प्राप्त हुई, जिनसे यहां के इतिहास निर्माण में सहायता मिलती है। यहां से प्राप्त अभिलेखीय साक्ष्यों में मुहरें, मुद्राछापें, मूर्तियों पर उत्कीर्ण लेख, शिलालेख तथा ताम्रपत्र लेख महत्वपूर्ण है।

नालन्दा से हजारों की संख्या में मुद्रा छापें प्राप्त हुई हैं जिन पर धर्मचक्र प्रवर्तन का चिह्न बना हुआ है। मुद्राओं के बीच में चक्र तथा उसके दोनों ओर बैठे हुए एक–एक हिरनों का अंकन मिलता है। ऐसा लगता है कि यह चिह्न नालन्दा विश्वविद्यालय का पहचान चिह्न था जो ज्ञान–प्रचार का सूचक था। निडर तथा शन्तिमय बैठे हुए दोनों हिरन शान्ति के द्योतक है तथा बीच में बना चक्र ज्ञान साम्राज्य का प्रतीक जान पड़ता है।[44] इन मुद्रओं पर 'श्री नालन्दा–महाविहारीया–र्य–भिक्षु–संघस्य' (नालन्दा महाविहार के आर्य भिक्षु संघ की) लेख अंकित है।[45] कुछ ऐसी मुद्रछापें भी प्राप्त हुई हैं जिन पर बोधिसत्व, पद्पाणि, अवलोकितेश्वर, मैत्रेय तथा तारा का अंकन है।[46] सन् 1862 ई. में कनिंघम को नालन्दा से वागीश्वरी देवी की एक मूर्ति मिली थी जिस पर अंकित लेख के अनुसार यह मूर्ति गोपाल द्वितीय के शासन काल के प्रथम वर्ष (935ई.) में स्थापित की गयी थी।[47]

मुद्रा छापों तथा मूर्तियों पर उत्कीर्ण लेख के अतिरिक्त नालन्दा से कई शिलालेख तथा ताम्रपत्र लेख भी प्राप्त हुए हैं जिनमें से कुछ लेख तो अत्यन्त छोटे हैं, फिर भी नालन्दा के इतिहास निर्माण में इनका अमूल्य योगदान हैं। विहार शरीफ से 7 मील दक्षिण पूर्व घोश्रवण नामक स्थान से सन् 1848 ई. में कैप्टन किट्टों को एक अभिलेख प्राप्त हुआ था जो देवपाल के शासन काल का है। इस लेख में नगरहार (आधुनिक जलालाबाद, अफगनिस्तान) निवासी इन्द्रगुप्त के पुत्र वीरदेव के कार्यों का विवरण है जिसे नालन्दा की देखभाल के लिए संघाराम का अध्यक्ष चुना

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

गया था।[48] संघाराम स्थल संख्या–एक के ध्वंस से एक ताम्रपत्र लेख प्राप्त हुआ था जो देवपाल के शासन काल (810–850ई.) का तथा मुंगेर से जारी किया गया था। इस लेख के अनुसार सुवर्ण द्वीप (सुमात्रा) के शैलेन्द्र वंशी शासक बालपुत्रदेव द्वारा नालन्दा में बनवाये गये विहार में रहने वाले भिक्षुओं के भरण–पोषण हेतु उनके दूत की प्रार्थना पर देवपाल ने अपने शासन काल के 39वें वर्ष में पांच गांव दान में दिया।[49] अन्य अभिलेखों में यशोवर्मदेव का आठवीं शताब्दी ई. में लिखित अभिलेख महत्वपूर्ण है। जिसमें बालादित्य द्वारा नालन्दा में बौद्ध मन्दिर के निर्माण का उल्लेख मिलता है।[50] नालन्दा से 1863 ई. में एक शिलालेख प्राप्त हुआ था जो महिपाल प्रथम के शासन काल के 11वें वर्ष का है। इस शिलालेख से ज्ञात होता है कि नालन्दा किसी अगिनकाण्ड में नष्ट हो गया था जिसका बाद में पुनर्निर्माण किया गया।[51] अतः नालन्दा के इतिहास के पुनर्निर्माण में इन अभिलेखों का योगदान सहजतः स्पष्ट है।

उपरोक्त कथन से स्पष्ट होता है कि प्राचीन साहित्यिक स्रोतो में नालन्दा की प्रासंगिकता कितनी हैं बौद्ध व जैन तथा विदेशी यात्रियों का यात्रा–वृतान्त इस बात के धोतक है। इसकी महत्वत्ता इतनी थी कि प्राचीन नालन्दा महाविहार की छवि उभरकर नव नालंदा महाविहार के रूप में वर्तमान में हमारे सामने आती है। जो 5वी सें 7वीं शताब्दी के बीच लगभग 700 वर्षो तक बौद्ध शिक्षा का एक महान केन्द्र था। बौद्ध शिक्षा के विकास में नालन्दा महविहार का योगदान सर्वविदित है। नालन्दा विश्वविद्यालय के अनेक आचार्यो ने पूरी दुनिया में बौद्ध संस्कृति एवं ज्ञान के प्रचार–प्रसार में सहायता की है।

भारतीय गणरज्य के प्रथम राष्ट्रपति महामहिम डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद के मन में यह विचार आया और उन्होने बौद्ध शिक्षा के प्राचीन केन्द्र नालन्दा की प्राचीन गरिमा को पुनस्थापित करने की घोषणा की और इसके परिणाम स्वरूप नव नालन्दा महाविहार की स्थापना हुई।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

20 नवम्बर 1951 को महामहिम राष्ट्रपति डा0 राजेन्द्र प्रसाद ने प्रथम भवन की आधार शिला रखी, जो प्राचीन कालीन नालन्दा के महत्व को दर्शाता हैं आधार शिला पर निम्नलिखित शब्द उत्कीर्ण किये गये।

''उसे अंधकार की रात्रि (रसका अंधकार युग) व्यतीत हो जाने के उपरांत देशज भाषा (लोक भाषा सहित) को प्रकाशित करने हेतु नालन्दा के सूर्य की रश्मिया इसी शिला के शिखर पर उदित है।''

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. दीघ निकाय पालि, भाग दो, अनु. स्वामी द्वारिकादास शास्त्री, वाराणसी, 1996 पृष्ठ 339–440।
2. वही, पृष्ठ–340–341
3. वही, भाग– एक, पृष्ठ–224
4. दीघ, निकाय, भाग–एक, केवट्ट सुत्त, पृष्ठ–1।
5. वही, भाग दो, पृष्ठ–83–84।
6. संयुक्त निकाय, अनु भिक्षु जगदीश कश्यप, वाराणसी, 1954, पृष्ठ–585
7. संयुक्त निकाय, भाग–चार, पृष्ठ–311।
8. मज्झिम निकाय, वही, त्रिपाठी, हवलदार, बौद्धधर्म ओर बिहार, पटना, 1960, पृष्ठ–125।
9. संयुक्त निकाय, वही, पृष्ठ 585।
10. जातक, भाग–एक, अनु0–भदन्त आनन्द कौसल्यामन, प्रयाग, पृष्ठ–553।.
11. घोष, ए. नालन्दा, अनु.–केदारनाथ शास्त्री, पृष्ठ–2–3।
12. सुमंगलविलासिनी, भाग, एक, पृष्ठ–35
13. राइस डेविड्स, टी.डब्ल्यू , बुद्धिस्ट इण्डिया, पृष्ठ–103।

14. चोपड़ा, सरला, प्राचीन भारतीय पथ, वाराणसी, 1987, पृष्ठ–135

15. जैन सूत्राज, सैकरेट बुक्स ऑफ दी ईस्ट, जिल्द–22, पृष्ठ–264।

16. उवासगढ़साओं, पृष्ठ–109।

17. श्रवण भगवान महावीर, पृष्ठ–180।

18. वही, पृष्ठ–191–192।

19. पंत, आर, नालन्दा एण्ड बुद्धिज्म, रिसर्च वालूम– viii, नालन्दा, 2002 पृष्ठ–316

20. वर्मा, जगन्मोहन, चीनी यात्री फाह्यान का यात्रा विवरण, काशी, सं–1976, पृष्ठ–62–63।

21. वर्मा, जगन्मोहन, वही।

22. संकालिया, एच.डी., वही, पृष्ठ–43।

23. वही– पृष्ठ – 81

24. तारानाथ, लामा, भारत में बौद्व धर्म का इतिहास, अनु–रिंगजिन लुण्डुप लामा, पटना, 1971, पृष्ठ 39।

25. शास्त्री, हीरानन्द, नालन्दा, दिल्ली, 1938, पृष्ठ–7 बील, एस, बुद्विस्ट ऑफ दी वेस्टर्न वर्ल्ड,भाग–दो, लन्दन, 1906।

26. वाटर्स, थामस, आन युवानच्वांग्स, ट्वेल्स इन इण्डिया, जिल्द–2, पृष्ठ 164। बील, एस, बुद्धिस्ट रिकार्डस ऑफ दी वेस्टर्न वर्ल्ड, जिल्द–2, पृष्ठ– 168।

27. श्रीवास्तव, ए.पी. नालन्दा की स्थापत्य एवं मूर्तिकला, नई दिल्ली, 1994, पृष्ठ 12 घोष, ए. वही, पृष्ठ 5 ।

28. घोष, ए.वही, पृष्ठ–7।

29. हवी–ली, दी लाइफ ऑफ ह्वेनसांग, पृष्ठ 112–113।

30. घोष, ए., वही, पृष्ठ–6।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

31. ह्वेनसांग, बुद्विस्ट रेकाड्र्स ऑफ दी वेस्टर्न वर्ल्ड, अनु. एस.बील. पृष्ठ 170।

32. वाटर्स, थामस, आन युवानच्वांग्स, ट्वेल्स इन इण्डिया, जिल्द–2, पृष्ठ 174।

33. हवी–ली, वही, पृष्ठ–121, श्रीवास्तव, ए.पी., पृष्ठ 17।

34. पन्त, आर, हेरिटेज ऑफ नालन्दा एण्ड इट्स कास्टीन्यूटी, रिसर्च वालूम–VI ,नालन्दा, 2000, पृष्ठ–196।

35. घोष, ए. वही–9।

36. मेहता, पृथ्वी सिंह, बिहार एक ऐतिहासिक दिग्दर्शन, लहेरियासराय, 1940, पृष्ठ–165।

37. त्रिपठी, हवलदार, बौद्व धर्म और बिहार, पटना, 1960, पृष्ठ7199।

38. शास्त्री,हीरानन्द, वही, पृष्ठ–11।

39. घोष, ए. वही।

40. त्रिपाठी, हवलदार, वही, पृष्ठ–198।

41. घोष, ए,वही, पृष्ठ–10।

42. बापट, पी.वी, बौद्व धर्म के 2500 वर्ष, दिल्ली, 1956, पृष्ठ–136।

43. मुकर्जी, आर.के., ऐशियन्ट इण्डियन एजुकेशन, दिल्ली 1974 , पृष्ठ 579।

44. शास्त्री, हीरानन्द, नालन्दा, पृष्ठ 12।

45. घोष,ए. नालन्द, पृष्ठ 55।

46. उपासक,सी.एस., नालन्दा पास्ट एव प्रजेन्ट, नालन्द–1997, पृष्ठ–55।

47. मैत्र, ए.के., गौडलेखमाला, राजशाही, 1913, पृष्ठ–86, घोष, ए., वही, पृष्ठ–13।

48. उपासक, वही, पृष्ठ–61 घोष, वही।

49. वही, पृष्ठ–60, घोष, वही।

50. उपासक, वही, पृष्ठ–60।